बांग्लादेश: इतिहास, आजादी और राजनीतिक व्यवस्था

बांग्लादेश एक ऐतिहासिक रूप से समृद्ध क्षेत्र रहा है, जो प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक विभिन्न साम्राज्यों, औपनिवेशिक शासनों और संघर्षों का हिस्सा रहा है। इसकी स्वतंत्रता की कहानी बंगाली राष्ट्रवाद, आर्थिक शोषण और सांस्कृतिक पहचान से जुड़ी हुई है।

---

1. बांग्लादेश का इतिहास

बांग्लादेश का ऐतिहासिक परिदृश्य तीन मुख्य चरणों में विभाजित किया जा सकता है—प्राचीन काल, मध्यकालीन युग और औपनिवेशिक एवं आधुनिक काल।

(i) प्राचीन काल (ईसा पूर्व 3000 – 1200 ईस्वी)

- यह क्षेत्र गंगा-ब्रह्मपुत्र नदी घाटी सभ्यता का हिस्सा था।
- महाजनपद काल (600 ईसा पूर्व) में बंगाल क्षेत्र वंग और पुंड्रवर्धन नामक जनपदों का केंद्र था।
- गुप्त साम्राज्य (4वीं-6वीं शताब्दी) के दौरान बंगाल व्यापार और संस्कृति का केंद्र बना।
- पाल वंश (8वीं-12वीं शताब्दी) ने बौद्ध धर्म को बढ़ावा दिया और बंगाल में कला एवं साहित्य का स्वर्णयुग लाया।

(ii) मध्यकालीन काल (1200 – 1757 ईस्वी)

- 1204 में तुर्क सेनापति बख्तियार खिलजी ने बंगाल पर आक्रमण कर मुस्लिम शासन की नींव रखी।
- बंगाल सल्तनत (14वीं-16वीं शताब्दी) के दौरान क्षेत्र व्यापार और इस्लामिक संस्कृति का केंद्र बना।
- 1576 में बंगाल मुगलों के अधीन आ गया, और यह साम्राज्य का समृद्ध प्रांत बन गया।
- मुगल काल में ढाका व्यापार और प्रशासन का महत्वपूर्ण केंद्र बना।

(iii) औपनिवेशिक एवं आधुनिक काल (1757 – 1971)

- 1757 में प्लासी के युद्ध के बाद बंगाल ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन आ गया।
- 1905 में लॉर्ड कर्ज़न द्वारा बंगाल का पहला विभाजन किया गया, जिससे बंगाली राष्ट्रवाद को बल मिला।
- 1911 में विभाजन रद्द कर दिया गया, लेकिन बंगाली समाज में सांप्रदायिक विभाजन गहरा गया।
- 1947 में भारत के विभाजन के दौरान बंगाल का विभाजन हुआ—पश्चिम बंगाल (भारत) और पूर्वी पाकिस्तान (बाद में बांग्लादेश)।

---

2. बांग्लादेश की आजादी (1971)

(i) पूर्वी पाकिस्तान की समस्याएँ (1947-1971)

- भाषाई भेदभाव: पाकिस्तान सरकार ने उर्दू को राष्ट्रीय भाषा घोषित किया, जिससे 1952 में भाषा आंदोलन हुआ।
- राजनीतिक उपेक्षा: पश्चिमी पाकिस्तान की हुकूमत ने पूर्वी पाकिस्तान को सत्ता में भागीदारी नहीं दी।
- आर्थिक शोषण: पूर्वी पाकिस्तान, जो पाकिस्तान की जीडीपी में बड़ा योगदान देता था, को विकास में उचित भाग नहीं मिला।
- **1970** का आम चुनाव: अवामी लीग ने पूर्वी पाकिस्तान में भारी जीत दर्ज की, लेकिन पाकिस्तान सरकार ने सत्ता हस्तांतरण से इनकार कर दिया।

(ii) मुक्ति संग्राम एवं स्वतंत्रता (1971)

- 25 मार्च 1971 को पाकिस्तान सेना ने 'ऑपरेशन सर्चलाइट' के तहत ढाका में नरसंहार किया।
- 26 मार्च 1971 को शेख मुजीबुर रहमान ने बांग्लादेश की स्वतंत्रता की घोषणा की।
- भारतीय सेना ने 3 दिसंबर 1971 को पाकिस्तान के खिलाफ युद्ध छेड़ा।
- 16 दिसंबर 1971 को पाकिस्तान ने आत्मसमर्पण किया और बांग्लादेश स्वतंत्र राष्ट्र बना।

---

3. बांग्लादेश की राजनीतिक व्यवस्था

(i) संविधान एवं शासन प्रणाली

- **1972** में संविधान लागू हुआ, जिसमें लोकतंत्र, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता और राष्ट्रवाद को बुनियादी सिद्धांत बनाया गया।
- प्रारंभ में संसदीय प्रणाली थी, लेकिन बाद में सैन्य शासन के दौरान राष्ट्रपति प्रणाली लागू हुई।
- 1991 में लोकतंत्र बहाल हुआ और संसदीय प्रणाली फिर से स्थापित हुई।

(ii) सरकार की संरचना

- राष्ट्रपति: संवैधानिक प्रमुख, लेकिन सीमित अधिकार।
- प्रधानमंत्री: सरकार का प्रमुख, संसद में बहुमत प्राप्त दल का नेता।
- संसद (जातीय संसद): एकसदनीय, 350 सीटें (300 निर्वाचित + 50 महिलाओं के लिए आरक्षित)।
- न्यायपालिका: स्वतंत्र न्यायपालिका, सर्वोच्च न्यायालय सर्वोच्च संस्था।

(iii) प्रमुख राजनीतिक दल

1. अवामी लीग **(AL):** शेख मुजीबुर रहमान द्वारा स्थापित, वर्तमान में सत्ता में।
2. बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी **(BNP):** 1978 में ज़िया उर रहमान द्वारा स्थापित, मुख्य विपक्षी दल।
3. जातीय पार्टी **(JP):** हुसैन मोहम्मद इरशाद द्वारा स्थापित।
4. इस्लामी दल: जमात-ए-इस्लामी, जिसे 2013 में प्रतिबंधित कर दिया गया।

(iv) राजनीतिक चुनौतियाँ

- लोकतंत्र पर खतरा: अवामी लीग और BNP के बीच तीव्र राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता।
- सैन्य हस्तक्षेप: 1975, 1982 और 2007 में सैन्य शासन रहा।

- धार्मिक कट्टरता: इस्लामी आतंकवाद की चुनौतियाँ।
- चुनावी धांधली: विपक्षी दल चुनावों की निष्पक्षता पर सवाल उठाते हैं।

निष्कर्ष

बांग्लादेश ने प्राचीन काल से आधुनिक युग तक कई उतार-चढ़ाव देखे हैं। 1971 की स्वतंत्रता के बाद यह देश राजनीतिक अस्थिरता, सैन्य शासन और लोकतांत्रिक संघर्षों से गुजरा। हालांकि, वर्तमान में यह दक्षिण एशिया की तेजी से उभरती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। आर्थिक विकास, शिक्षा और महिला सशक्तिकरण में इसने उल्लेखनीय प्रगति की है, लेकिन राजनीतिक ध्रुवीकरण, भ्रष्टाचार और मानवाधिकारों की स्थिति अभी भी चिंता के विषय बने हुए हैं।